

ए गिफ्ट

काल्ड

लाइफ

*A Gift
Called
Life*

डॉ. सिरि

अनुवाद

आर. चन्द्रशेखर

डर अच्छा ही है...

अपने छियानवे जन्मदिन को मना रहे एक वृद्ध से उनके अपने प्रिय लोगों ने उनके दीर्घायु होने के पीछे राज के बारे में पूछा।

“कुछ खास कारण नहीं है। मुझे बीमार होकर बिस्तर पकड़ने, दवाइयाँ खाने और इंजेक्शन लेने से बहुत डर लगता है। इसी डर के मारे, बीमार न पड़ूँ- इसके लिए मैं नियमित रूप से सही भोजन लेता रहा। बस उस आहार ने अपना कर्तव्य निभाया।” हँसते हुए उन्होंने उत्तर दिया।

कभी-कभी साहस की तुलना में डर अधिक मददगार साबित होता है।

मैंने कई लोगों को अनेक विषयों के बारे में डरते देखा है।

- प्रतिदिन योगाभ्यास करने वाली युवती से जब योगाभ्यास करने का कारण पूछा जाता है... तो वह कहती है कि उसे ‘डर’ है कि यदि वह मोटी दिखेगी तो सुन्दर नहीं लगेगी।

- रातभर जाग कर पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी से कारण पूछते हैं तो वह कहता है... उसे ‘डर’ है कि वह फेल न हो जाए।

- तेज धूप में काम करने वाले मजदूर से पूछते हैं तो... वह कहता है कि उसे ‘डर’ है कि भूख न झेल पाने के कारण कहीं उसके बच्चे मर न जाएँ।

- सीमा पर पहरा देने वाले सैनिक से पूछते हैं तो... वह कहता है कि उसे ‘डर’ है कि कहीं दुश्मन देश के अंदर घुसपैठ न कर बैठे।

- दिन-रात अभ्यास करने वाले खिलाड़ी से कारण पूछते हैं तो... वह कहता है कि उसे ‘डर’ है कि कहीं वह हार न जाए।

डर यदि आदमी को स्वस्थ और तंदरुस्त रखता है तो वह अच्छा ही है।

डर यदि देश की रक्षा में काम आजाए तो वह अच्छा ही है।

डर यदि किसी के जीत का कारण बने तो वह अच्छा ही है।

यदि डर, तुम्हें अपने आप को जीवित रखने के लिए सहायक होता है तो... वह ‘डर’

सही अर्थ में अच्छा ही कहलाएगा। ऐसी स्थिति में, मेरा मानना है कि 'डरना' कोई बुरी बात नहीं है।

मैं डर रही हूँ कि जिस जीवन के कल का कोई भरोसा नहीं उसमें कहीं देर न हो जाए... और मेरी इन बातों को मैं आप तक पहुँचाने में चूक न जाऊँ... इसलिए अभी... इसी पल मेरे इन विचारों को आपके सम्मुख रख रही हूँ।

क्या पता कल मेरा अपना हो या नहीं, इसलिए मैं अपनी मंजिल की तरफ आज ही कदम बढ़ा रही हूँ।

आपको किस बात का डर है?



सेतु

दो बुजुर्ग मंदिर के प्रांगण में बैठे रामायण पर बातचीत कर रहे थे।

“जब वानर सभी बड़े-बड़े पत्थर उठाकर फेंक रहे थे, तब समुद्र को कितना बुरा लगा होगा। वह भी, जब भगवान स्वयं इस काम को अंजाम दे रहे थे, उसे कितनी पीड़ा पहुँची होगी। एक के बाद एक, इतने सारे पत्थर उस पर फेंके जा रहे थे, फिर भी वह मौन धारण किए हुए था। कितनी घोर स्थिति रही होगी उसकी?” पहले वाले व्यक्ति ने अपना अफसोस जताया।

सुनकर दूसरे व्यक्ति ने कहा-

“हम सोचते हैं कि उन्होंने पत्थर फेंके हैं- हो सकता है समुद्र ने सोचा हो कि सेतु बनाया जा रहा है। वह यूँ भी सोच सकता है न कि भगवान उसका आश्रय पाते हुए उस पर सेतु निर्माण करने के लिए उसकी मदद ले रहे हों। उसे गर्व भी हुआ होगा कि भगवान जैसे को भी अपनी पत्नी तक पहुँचने के लिए उसकी सहायता पाना अनिवार्य हो गया है। उसे यह भी लगा होगा कि इस तरह, भगवान ने परोक्ष रूप से उसके महानता का परिचय सारी दुनिया को दी है।”

जिस तरह समुद्र पर पत्थर फेंके गए थे उसी प्रकार इस जीवन रूपी यात्रा में राह पर चलते समय अनेक लोग कई पत्थर हम पर फेंकते रहते हैं। उनके द्वारा अवरोध पहुँचने की बात सोचकर दुःखी होने से बेहतर है, उन पत्थरों से सेतु बनाते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँचने की हम सोंचे। तब वही पत्थर तुम्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सेतु बनकर मदद करेंगे।

वह भी काफी तेजी से... काफी सुरक्षित रूप से !!



बारिश

एक दिन शाम को अपने पिता के साथ खेल रहे स्वीटी और साहिल ने आकाश में उमड़ रहे बादलों को देखते हुए मासूमियत से पूछा- “पापा! असल में ये बारिश बनती कैसे है?”

पापा ने उन दोनों को पास बिठाकर कहा- “वातावरण में फैली गरमी से समुद्र का पानी भाप बनकर आकाश में पहुँच जाता है और वहाँ बादल का रूप धारण करता है। फिर बूँदों के रूप में, यानी बारिश बनकर वह धरती पर बरसता है।

बातों-बातों में ही बूँदा-बाँदी शुरू हो गयी। आकाश से गिर रही उन बूँदों को देखकर स्वीटी खुशी से उछलने लगी। लेकिन, साहिल उदास-चेहरा लिए आकाश की ओर देखने लगा। अब तक जो साहिल उत्साह के साथ खेल-कूद रहा था, उसे अचानक खामोश होते हुए देखकर पापा ने साहिल के पास जाकर प्यार से पूछा- “बेटा! क्या हुआ?”

“पापा! उस बादल ने कितनी मेहनत से समुद्र के पानी को बूँदों में परिवर्तित कर अपने पास संजोए रखा होगा न... अब इस तरह वे सभी बूँदें जमीन पर गिरने लगीं तो उस बादल को कितना दुःख होता होगा... अब यदि बारिश तेज हो जाएगी तो वह बादल अपनी सारी बूँदें खो देगा ना?... बेचारा बादल।”

इतने में स्वीटी खुशी से उछलते हुए पास आकर साहिल से बात कर रहे पापा से लिपट जाती है और उनसे पूछती है...

“पापा! अभी बारिश के पानी से समुद्र भर जाएगा न!... यानी उसने जो पानी खोया था, वह पानी उसे फिर से वापस मिल जाएगा...” उसने खुशी से ताली बजाते हुए कहा।

स्वीटी और साहिल... दोनों उसी बारिश, उसी बादल और समुद्र के बारे में कह रहे थे। मगर, उनकी सोच अलग थी! किन्तु, दोनों की बातों में सच्चाई थी।

यदि बारिश को होना है, तो बादल को पिघलना ही होगा।

यदि, बारिश होगी, तो समुद्र को अपना खोया हुआ पानी वापस मिलेगा!

अतः हमारा जीवन इस पर निर्भर करता है कि परिस्थितियों के बारे में हमारी सोच क्या है।

यानी आपको निर्णय लेना होगा कि आप बादल के पिघलने पर अफसोस करना चाहते हैं या फिर समुद्र में पानी भर आने पर खुश हैं।

सृजनात्मकता क्या है ?

अपने जीवन में अनेक वस्तुओं की रूपकल्पना करते हुए, हर पल सृजनात्मक रूप से सोचते हुए, उस सोच की मदद से कई अन्य चीजों की सृष्टि करने वाले अपने पिता को देखकर उसके बेटे ने पूछा-

“पिताजी! मैं बचपन से आपको देख रहा हूँ। हल पल आप कुछ न कुछ नया सोचते रहते हैं, लगातार आप अपनी सृजनात्मकता को पैना करते रहते हैं। मेरी उम्र चालीस की हो गयी है- और मैं कुछ नया सोच नहीं पाता हूँ। लेकिन आप यह सब कैसे करवाते हैं? हर पल कुछ न कुछ नया कर दिखाने की लगन कहाँ से आती है?”

बेटे के इस प्रश्न को सुनकर हँसते हुए पिता ने कहा-

“बेटा! सृजनात्मकता मेरे लिए एक व्यसन सी बन गयी है। मैं उसका गुलाम बन गया हूँ।”

पिता के उत्तर से बेटा संतुष्ट नहीं हुआ। उसका संदेह अभी बना हुआ था, उसने फिर से पूछ-

“लेकिन, इस तरह, प्रतिदिन आप कुछ न कुछ नई चीज का सृजन कैसे कर लेते हैं?”

“यह बहुत ही मामूली सी बात है। किसी चीज को सृजित करने से पूर्व, अपने मन से कुछ गलत करने का संदेह और डर को पूरी तरह से हटा दो। जो तुमने सोचा है, उसे करके दिखाओ... बस...” शांत चित्त होकर पिता ने कहा।

क्या आप अपने में छिपी सृजनात्मकता को प्रदर्शित करने से डरते हैं? डर की वजह से उसके पंख मत काटिए। उसे एक आजाद पंछी की तरह उड़ने दीजिए।

निश्चित रूप से... वह अपने साथ आपको भी सुंदर आकाश की ऊँचाइयों में विचरण करवाएगी।



लहरें

इंटर की परीक्षाएँ अभी दस दिनों में आरंभ होने वाली थीं। एक अध्यापिका ने अपने विद्यार्थियों का परीक्षाओं के प्रति डर दूर करने के उद्देश्य से, उन सभी से एक-एक ऐसा वाक्य पेपर पर लिखकर देने को कहा, जो उनके लिए प्रेरणादायक लगी हों।

विद्यार्थियों ने उनके कहे अनुसार एक-एक वाक्य पेपर पर लिखकर अध्यापिका के सामने रखा। उसमें से एक पर्ची पर लिखा हुआ था...

“लहरें मेरे लिए आदर्श हैं- इस लिए नहीं कि वे उठकर गिरती हैं, इसलिए कि वे गिर कर भी उठती हैं...।”

इस वाक्य को पढ़कर अध्यापिका मुस्करायी। इसी तरह वे अन्य लोगों के भी वाक्य पढ़ रही थीं। इसी तरह का एक और वाक्य उन्हें पढ़ने को मिला। उसे पढ़ने लगी, उसमें लिखा हुआ था...

“लहरें मेरे लिए आदर्श हैं- इसलिए नहीं कि वे उठकर गिरती हैं या गिरकर भी उठती हैं। इसलिए कि वे कहते हैं- उठना-गिरना, ये दोनों शास्वत नहीं हैं, जीवन तो इन दोनों से ही तो बनता है। इस गिरने-उठने के बारे में नहीं सोचते हुए, हमें अपने प्रयास जारी रखना होगा...”

हम सोचते हैं कि जीवन का मतलब गिरना और उठना ही है। हारते हुए भी हम जीतना चाहते हैं। वास्तव में यह प्रेरणादायक ही है। लेकिन, जीतना ही जिंदगी नहीं है। हमारे जीवन में हार-जीत का सिलसिला चलता ही रहता है। इसलिए, यदि हार जाते हैं तो हताश हो जाना और जीत होती है तो फूले नहीं समाना, दोनों ठीक नहीं है। वास्तव में दोनों के मिलन से ही जीवन में परिपक्वता आती है। इसलिए, तुम्हारे जीवन के रास्ते पर हार-जीत का सामना होता हो तो, तुम्हें न हार पर रूकना चाहिए और न ही जीत पर। दोनों को एक समान स्वीकार करते हुए... हार से शिक्षा प्राप्त करो और जीत से विश्वास। इस तरह, अपने प्रयासों को जारी रखना ही सही माइने में जीवन का अर्थ होगा।



End of Preview.

Rest of the book can be read @

<http://kinige.com/book/A+Gift+Called+Life+Hindi>

*** * ***